



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 329] नई दिल्ली, सोमवार, नवम्बर 8, 1982/कार्तिक 17, 1904
No. 329] NEW DELHI, MONDAY, NOVEMBER 8, 1982/KARTIKA 17, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग)	(1)	(2)	(3)	(4)
अधिलेखनाएं				
नई दिल्ली, 8 नवम्बर, 1982				
सं. : 50/82—केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क				
सं० का० नि० 665(अ)—केन्द्रीय सरकार केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 9 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, इसमें उपाखण्ड सारणी के स्तम्भ (3) में विनिर्दिष्ट वर्णन के और केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और तमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं० 19 की, उक्त सारणी के स्तम्भ (2) में तत्स्थानीय प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट उपमर्शों के अन्तर्गत आने वाले सूती फैब्रिकों की, उक्त अधिनियम की धारा 3 के अधीन उन पर उद्घरणार्थ समस्त उत्पाद-शुल्क से उक्त सारणी के स्तम्भ (4) में की तत्स्थानीय प्रविष्टि में रखी गई शर्तों के, यदि कोई हों, अधीन रखने हुए छूट देती है।				बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के अध्याय 10 में उल्लिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है और फैब्रिक का टैक्सेशन छाई, रगई, बिर-जन या साइजों की प्रक्रिया में पूर्णतः उपयोग किया जाता है और सामूलों का डे के रूप में प्रागे उपयोग नहीं किया जा सकता है।
सारणी				
क्रम उप-वर्णन	वर्णन	जानें		
सं० मद				
(1)	(2)	(3)	(4)	
1. 1	किमी टेक्सटाइल, छाई, रगई, यदि उस कारखाने में अन्यत्र बिरजन या साइजों प्रक्रिया जिसमें उमका उत्पाद में उपयोग के लिए आशयित किया जाता है उपयोग सूती फैब्रिक।			यदि उसे कारखाने से अन्यत्र, जिसमें उमका उत्पादन किया जाता है, उपयोग किए गए ऐसे फैब्रिक के बारे में हेतुस्थ उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के अध्याय 10 में उल्लिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाना है।
2. 1	लेपित आधारी उद्योग में उपयोग के लिए आशयित सूती ट्विन, लट्टा और मार्कीन सूती फैब्रिक			यदि उसे कारखाने से अन्यत्र, जिसमें उमका उत्पादन सूती फैब्रिक

(1)	(2)	(3)	(4)	(1)	(2)	(3)	(4)
			किया जाता है, उपयोग किए गए ऐसे फेब्रिक के बारे में, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के अध्याय 10 में उपबर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।	13. 1	क्षतिग्रस्त या निम्नमानक के धीरे सूती फेब्रिक जिन्हें "चिन्दी" के रूप में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् सूती फेब्रिक के वास्तविक सामान्य कटे टुकड़े जो 23 सेंटीमीटर या उससे कम लम्बे हैं जिनसे अन्तर्गत क्षतिग्रस्त या अन्यथा कम मानक के सूती फेब्रिक के अवशिष्ट या कटे टुकड़े हैं जिन्हें सामान्य बुनाई, प्रसंस्करण या वैकिंग संक्रिया या नमूनों का निकालने के समय त्याग दिया गया है।		
4. 1	होजियरी जिसके बारे में ऐसे अधिकारी को जो सहायक केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क कलक्टर की पंक्ति के नीचे का न हो समाधानप्रद रूप में यह साबित कर दिया गया है कि वह होजियरी वस्त्रों के बनाने में उपयोग के लिए आशयित है।	यदि उस कारखाने से अन्यत्र, जिसमें उसका उत्पादन किया जाता है, उपयोग किए गए ऐसे फेब्रिक के बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के अध्याय 10 में उपबर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।		12.	वर्गीकृत किया गया है अर्थात् सूती फेब्रिक के वास्तविक सामान्य कटे टुकड़े जो 23 सेंटीमीटर या उससे कम लम्बे हैं जिनसे अन्तर्गत क्षतिग्रस्त या अन्यथा कम मानक के सूती फेब्रिक के अवशिष्ट या कटे टुकड़े हैं जिन्हें सामान्य बुनाई, प्रसंस्करण या वैकिंग संक्रिया या नमूनों का निकालने के समय त्याग दिया गया है।		
5. 1	सूती फेब्रिक की ट्रिमिंग और कतरने जो चौड़ाई में 7.5 सेंटीमीटर से अधिक नहीं हैं, यदि ऐसी ट्रिमिंग और कतरने पूर्णतः पहली अनुसूची की मव सं० 17 के अन्तर्गत वर्गीकृत किए जा सकने वाले कागज के विनिर्माण में उपयोग के लिए आशयित हैं।	यदि उस कारखाने से अन्यत्र, जिसमें उसका उत्पादन किया जाता है, उपयोग किए गए ऐसे फेब्रिक के बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के अध्याय 10 में उपबर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है।		14. 3	क्षतिग्रस्त या निम्नमानक सूती फेब्रिक जिन्हें "चिन्दी" के रूप में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् ऐसे फेब्रिक के वास्तविक सामान्य कटे टुकड़े जो 6 सेंटीमीटर या उससे कम लम्बे हैं।		
6. 1	भारतीय राष्ट्रीय ध्वज						
7. 1	शस्त्र कर्म अवशोषी लिट जो आधा किलोग्राम या उससे कम के पैकेटों में पैक किए गए हैं।						
8. 1	सूती फेब्रिक जो चौड़ाई में 15 सेंटीमीटर से अधिक नहीं हैं।						
9. 1	अप्रसंस्कृत सूती फेब्रिक, यदि हथ करों पर विनिर्मित हैं।						
10. 1	प्रसंस्कृत खादी, अर्थात् भारत में हथ से काने गए सूत से हथकरने पर बुना गया कोई कपड़ा।	यदि ऐसे फेब्रिक को खादी और ग्रामीणों आयोग द्वारा इस निमित्त सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा खादी के रूप में प्रमाणित किया गया है।					
11. 1	अप्रसंस्कृत सूती होज पाइप और उस रूप में बुनी गई पट्टी।						
12. 1	होजरी, अर्थात् तलिकाकार या अन्यथा बुना गया फेब्रिक, जिसमें एकल सूत या एकल या दोहरे सूत का समुच्चय बुलाकार या सपाट बुना बुनाई मशीन की सभी सुइयों में से होकर निकलने के परिणाम-स्वरूप फेब्रिक में सर्वत्र निरन्तर चक्रमण करता है।						

[फा० सं० 349/1/19/82-सी० आर० यू०]

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Revenue)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 8th November, 1982

NO. 250/82—CENTRAL EXCISES

G.S.R. 665(E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, the Central Government hereby exempts cotton fabrics of the description specified in column (3) of the Table hereto annexed and falling under the sub-items, specified in the corresponding entry in column (2) of the said Table, of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), from the whole of the duty of excise leviable thereon under section 3 of the said Act subject to the conditions, if any, laid down in the corresponding entry in column (4) of the said Table.

TABLE

Sl. No.	Sub-item No.	Description	Conditions
1	2	3	4
1.	1	Cotton fabrics intended for use in any textile printing, dyeing, bleaching or sizing process.	If the procedure set out in Chapter X of the Central Excise Rules, 1944 is followed in respect of such fabrics used elsewhere than in the factory of production and the fabrics are also fully

1	2	3	4	1	2	3	4
			used in the process of textile printing, dyeing, bleaching or sizing and cannot be put to further use as ordinary cloth	12	I	Hosiery, that is to say, knitted fabrics, tubular or otherwise, in which single or a set of single or a set of single or double yarn traverses continuously throughout the fabrics as a result of passing through all the needles of a circular or flat weft knitting machine	
2	I	Cotton drill, long cloth and Markin cotton fabrics intended for use in the coated abrasives industry	If the procedure set out in Chapter X of the Central Excise Rules, 1944, is followed in respect of such fabrics used elsewhere than in the factory of production	13	I and II	Damaged or sub-standard cotton fabrics which are classified as "chundies", that is to say, genuine normal cut-pieces of cotton fabrics which are 23 centimetres or less in length including remnants or cut-pieces of cotton fabrics, damaged or otherwise deficient in standard, discarded during the course of normal weaving, processing or packing operations or drawal of samples.	
3	I	Cotton fabrics intended for use in the manufacture of cotton absorbent lint	If the procedure set out in Chapter X of the Central Excise Rules, 1944, is followed in respect of such fabrics used elsewhere than in the factory of production	14	III	Damaged or sub-standard cotton fabrics which are classified as "chundies", that is to say, genuine normal cut-pieces of such fabrics which are 6 centimetres or less in length	
4	I	Hosiery which is proved to the satisfaction of an officer not below the rank of an Assistant Collector of Central Excise, to be intended to be used in the making of hosiery garments	If the procedure set out in Chapter X of the Central Excise Rules, 1944, is followed in respect of such fabrics used elsewhere than in the factory of production				
5	I	Trimmings and cuttings of cotton fabrics which are not more than 7.5 centimetres in width if such trimmings and cuttings are intended for use in the manufacture of paper classifiable under Item No. 17 of the aforesaid First Schedule	If the procedure set out in Chapter X of the Central Excise Rules, 1944, is followed in respect of such fabrics used elsewhere than in the factory of production				
6	I	Indian National Flags					
7	I	Surgical absorbent lint packed in packets of one half kilogram, or less					
8	I	Cotton fabrics of not more than 15 centimetres in width					
9	I	Unprocessed cotton fabrics if manufactured on a handloom					
10	I	Processed Khadi, that is to say, any cloth woven on handloom from yarns handspun in India	If the fabrics are certified as Khadi by an Officer duly authorised in this behalf by the Khadi and Village Industries Commission				
11	I	Unprocessed cotton hose pipes and belting woven as such					

[F No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 251/82 - केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क

सां० कां० नि० 666(अ)- केन्द्रीय सरकार अधिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का मामल) अधिनियम (1957 का 58) की धारा 2 की उपधारा (3) के साथ पठित केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के अधिनियम (1) द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं० 16/77-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 15 जुलाई 1977 को अधिकांश करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनु-पूर्व की मद सं० 19 के उप-मद 1 के अन्तर्गत आने वाले और इसमें उपाखण्ड सारणी के (जिसे इस अधिसूचना में इसके पश्चात् 'सारणी' कहा गया है) स्तम्भ (2) में विनिर्दिष्ट सूची फीब्रिक को केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) और अधिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का मामल) अधिनियम 1957 (1957 का 58), दोनों के अर्थ में उस पर उदाहरणीय उत्पाद-शुल्क की उतनी रकम से छूट देती है जितनी उसके स्तम्भ (3) में की नम्यमन्त्र प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट दर में वर्गीकृत रकम से अधिक है।

सारणी

क्रम सं०	वर्णन	दर
(1)	(2)	(3)
1	ऐसे पूर्ण फौजदारी जिनमें मूल का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है।	मूल्य का 15 प्रतिशत
2	ऐसे सूती फौजदारी (उनमें भिन्न जिनमें मूल का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है) जिनका मूल्य प्रति वर्ग मीटर	
(1)	चार रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का दस प्रतिशत।
(2)	चार रुपए से अधिक है किन्तु छह रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का दस प्रतिशत।
(3)	छह रुपए से अधिक है किन्तु सात रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का बार प्रतिशत।
(4)	सात रुपए से अधिक है किन्तु आठ रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का छह प्रतिशत।
(5)	आठ रुपए से अधिक है किन्तु नौ रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का आठ प्रतिशत।
(6)	नौ रुपए से अधिक है किन्तु दस रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का दस प्रतिशत।
(7)	दस रुपए से अधिक है किन्तु ग्यारह रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का बारह प्रतिशत।
(8)	ग्यारह रुपए से अधिक है किन्तु बारह रुपए से अधिक नहीं है।	मूल्य का चौदह प्रतिशत।
(9)	बारह रुपए से अधिक है।	मूल्य का पन्द्रह प्रतिशत।
3	सूती फौजदारी जो कम से कम 1 और 2 में विनिर्दिष्ट नहीं हैं।	मूल्य का पन्द्रह प्रतिशत।

परन्तु—

(1) हथकरघा फौजदारी की दशा में, जब उनका प्रसंस्करण हथकरघा विकास आयुक्त की निगरानी पर भारत सरकार द्वारा इस निमित्त अनुमोदित स्वतंत्र प्रसंस्करणकर्ता द्वारा किया जाता है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का साठ प्रतिशत निर्धारित शर्तों के अधीन रहते हुए कम कर दिया जाएगा, अर्थात्—

(क) ऐसे सूती फौजदारी की दशा में, जिनमें मूल का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है, जब उनकी निर्यात प्रसंस्करण के पश्चात् किन्तु छाई या रंगाई या दोनों के बिना की जाती है, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क मूल्य का पांच प्रतिशत होगा।

(ख) ऐसे सूती फौजदारी की दशा में, जो उपरोक्त शर्तों (क) के अन्तर्गत आने वाले सूती फौजदारी से भिन्न हैं, ऐसी दर में से ऐसी कमी मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

(2) जहां हथकरघा फौजदारी का प्रसंस्करण किसी राजपट्टाधिकारी या सहायक या हथकरघा की विकास के परियोजना के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित या अनुमोदित किसी संगठन के स्वायत्तशील कारखाने द्वारा शक्ति की सहायता से किया जाता है जहां ऐसे फौजदारी का उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समस्त उत्पाद-शुल्क से छूट दी जाएगी।

(3) (क) ऐसे सूती फौजदारी, जिनमें प्रसंस्करण मूल का औसत या मूल या दोनों का भार एक बटा छह से अधिक है : और

(ख) ऐसे कोंट के कपड़े, गुड के कपड़े, तस्सर, कांडराय, पबरीडोन, बेड-फाई, माटन, डेनिम, सैवेट, बूटेदार फौजदारी, गोल छेद वाली मच्छरदानी का जूते, जेन, बुता हुआ फौजदारी, टेपेस्ट्री, फर्निचर फौजदारी जिनके अन्तर्गत शीकडे पदों का कपड़ा है, पञ्चोपेट पदों का फौजदारी, टेरी टीनिंग जिनके अन्तर्गत टरफिश टीनिंग है, डेरी टीनिंग के कपड़े जिनके अन्तर्गत टर्किश टीनिंग के कपड़े हैं, कम्बल, फोलेनस, डक, फिन्टर कपड़े, ट्रैपिंग कपड़े और बुकल कपड़े।

की दशा में, जिनका विनिर्माण शक्तिपद्धति (कलर्स या प्रसंस्करण मशीनों) पर किया गया है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से मूल्य का छह प्रतिशत उस दशा में कम कर दिया जाएगा जिसमें ऐसे फौजदारी पर उक्त दर मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक है और उस दशा में पूर्ण छूट दी जाएगी जिनमें ऐसे फौजदारी पर उक्त दर मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक नहीं है।

(4) शक्ति कारखाना फौजदारी की दशा में [उनसे भिन्न जो खण्ड (iii) के अन्तर्गत आते हैं] और हथकरघा फौजदारी की दशा में (उनमें भिन्न जो खण्ड (i) और खण्ड (ii) के अन्तर्गत आते हैं, जब उनका प्रसंस्करण किसी स्वतंत्र प्रसंस्करणकर्ता द्वारा किया जाता है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का तीस प्रतिशत निर्धारित शर्तों के अधीन रहते हुए कम कर दिया जाएगा, अर्थात्—

(क) ऐसे सूती फौजदारी की दशा में, जिनमें मूल का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है, जब उनकी निर्यात प्रसंस्करण के पश्चात् किन्तु छाई या रंगाई या दोनों के बिना की जाती है, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क मूल्य का ग्यारह प्रतिशत होगा।

(ख) ऐसे सूती फौजदारी की दशा में, जो उपरोक्त शर्तों (क) के अन्तर्गत आने वाले सूती फौजदारी से भिन्न हैं, ऐसी दर में से ऐसी कमी मूल्य के दस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

(5) ऐसे सूती फौजदारी की दशा में, (जिनका प्रसंस्करण शक्ति या बाल्य की सहायता के बिना किया जाता है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का पचास प्रतिशत कम कर दिया जाएगा।

(6) ऐसे फौजदारी की दशा में, जो सूती वस्त्र (नियंत्रण आदेश, 1948 के अधीन वस्त्र आयुक्त द्वारा समय-समय पर परिभाषित "नियंत्रित श्रेणियों", "नियंत्रित मांडा", "नियंत्रित कमीज" का कांडा या "नियंत्रित जूत" के वर्णन के अन्तर्गत हैं और जिनके लिए अधिकतम कारखाना द्वारा कोमल वस्त्र आयुक्त द्वारा उक्त आदेश के अधीन विनिर्दिष्ट की गई हैं, उक्त श्रेणियों के अन्तर्गत उन पर उद्ग्रहणीय समस्त उत्पाद-शुल्क से इस शर्त के अधीन रहते हुए छूट दी जाएगी कि ऐसे फौजदारी का ऐसे कारखाना द्वारा जिनमें उनका विनिर्माण या प्रसंस्करण किया जाता है, किसी औद्योगिक समुदाय का प्रदाय नहीं किया जाता है, और यदि ऐसे फौजदारी का इस प्रकार प्रदाय किया जाता है तो कम करने वाला औद्योगिक समुदाय यह प्रमाणित करता है कि उनके द्वारा इस प्रकार कम किए गए फौजदारी का उपयोग अनन्तः पहनने के प्रयोजनों के लिए न कि निर्मल वस्त्र प्रयोजनों के लिए किया जाएगा।

(7) ऐसे जूत की दशा में, जो सूती वस्त्र नियंत्रण आदेश 1948 के अधीन वस्त्र आयुक्त द्वारा समय-समय पर परिभाषित "नियंत्रित जूत" के वर्णन के अन्तर्गत हैं और जिनके लिए अधिकतम कारखाना द्वारा कोमल वस्त्र आयुक्त द्वारा उक्त आदेश के अधीन विनिर्दिष्ट नहीं की गई हैं सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का पचास प्रतिशत कम कर दिया जाएगा।

* परन्तु यह और कि इस प्रकार उद्घरण्य शूलक की रफ्तार, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क और नमक अधिनियम 1911 (1944 का 1) के प्रश्न और अधिनियम उत्पाद-शुल्क विधेय महारा का माल (अधिनियम, 1957) (1957 का 58) के प्रश्न उद्घरण्य शूलक के बीच क्रमशः 75:25 के अनुपात में प्रमाणित की जाती।

परन्तु यह भी कि इस अधिवृत्त की कोई बात सूती फैब्रिक के टुकड़ों और चिपड़ों का लागू नहीं होती।

स्पष्टीकरण 1.—इस अधिवृत्त के प्रयोजनों के लिये,—

(क) "टुकड़े" से अभिप्रेत है,—

(i) विनिर्माण (जिसके अन्तर्गत प्रसंस्करण भी है) या पैक करने या नमूना लेने के सामान्य अनुक्रम के दौरान निकले सूती फैब्रिक के वस्तुतः कटे टुकड़े (जिनके अन्तर्गत तौलियों के कटे टुकड़े नहीं हैं) जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 45 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अतिरिक्त और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अतिरिक्त लम्बे हैं,

(ii) अनियमित सूती फैब्रिक (जिनके अन्तर्गत अनियमित तौलियाँ नहीं हैं) जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है, वहाँ 45 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, लम्बे हैं, और

(iii) अनियमित धोबियों या साड़ियों के कटे टुकड़े, जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 45 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, लम्बे हैं,

(ख) "हथकरघा फैब्रिक" से ऐसे सूती फैब्रिक अभिप्रेत हैं जो कपास के सूत से (जो हाथ से बने कपास के सूत से भिन्न हैं) तैयार किये गये हैं और शारीरिक श्रम से चलने वाले कारखाने पर बने गये हैं,

(ग) "स्वतन्त्र प्रसंस्करणकर्ता" से ऐसे विनिर्माता अभिप्रेत हैं जो शक्ति की सहायता से बस्त के प्रसंस्करण में अन्तर्गत रूप से लगा हुआ है और जिसका मूल की बात है या सूती फैब्रिकों की बुनाई में लगे हुए किसी कारखाने में कोई सामयिक हित नहीं है।

(घ) "चिपड़े" से अभिप्रेत है,—

(i) विनिर्माण (जिसके अन्तर्गत प्रसंस्करण भी है) या पैक करने या नमूने लेने के सामान्य अनुक्रम के दौरान निकले सूती फैब्रिक के वस्तुतः कटे टुकड़े, जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 23 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 45 सेंटीमीटर से अतिरिक्त और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 23 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 65 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, लम्बे हैं; और

(ii) अनियमित या निम्न मानक के सूती फैब्रिक के कटे टुकड़े, जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 23 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 35 सेंटीमीटर से अतिरिक्त और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 23 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 65 सेंटीमीटर से अतिरिक्त, लम्बे हैं।

स्पष्टीकरण 2. — "काउन्ट" से सूत का काउन्ट अभिप्रेत है।

स्पष्टीकरण 3.—सूती फैब्रिकों में सूत के श्रोत काउन्ट का प्रयोजन करने के प्रयोजन के लिये निम्नलिखित नियम लागू होंगे, अर्थात् :—

(क) बाईरों या ठोंगों में प्रयुक्त सूत गणना में नहीं लिया जायेगा;

(ख) अनेक तारों वाले सूत के लिये, आधारी एक तार के सूत का काउन्ट लिया जायेगा, और रोड यथास्थिति, में प्रति 25.4 मिलीमीटर में सिरों की संख्या या प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या को सूत में प्लाइयों की संख्या से गुणा कर दिया जायेगा; जहाँ भिन्न-भिन्न काउन्टों के एक तार के आधारी सूत है वहाँ ऐसे एक तार के आधारी सूत का काउन्ट, जिसमें अधिकतम काउन्ट है, प्रत्येक आधारी एक तार के सूत के काउन्ट के रूप में लिया जायेगा,

(ग) सूती और अन्य सूत के विभिन्न फैब्रिक की दशा में अन्य सूत को उल्लेख प्रयोजन के लिये काम का सूत समझा जायेगा;

(घ) जहाँ ताने या बाने में या दोनों में भिन्न काउन्टों के सूत हैं वहाँ उस सूत के काउन्ट का, जिसमें अधिकतम काउन्ट है, यथास्थिति, ताने या बाने का काउन्ट समझा जायेगा,

(ङ) सूत का (गोल छेद वाली मच्छरदानी की जाली की दशा में से भिन्न) श्रोत काउन्ट निम्नलिखित सूत्र के अनुसार निकाला जायेगा, अर्थात् :—

(ताने का काउन्ट × रोड में प्रति 25.4 मिलीमीटर में सिरों की सं०) + (बाने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या)

रोड में प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं० + (प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या)

प्राप्त फल के, जहाँ आवश्यक हो, आधे या अधिक अंश का एक के रूप में मानते हुए और आधे से कम अंश को छोड़ते हुए, पूर्णकित किया जायेगा।

(च) गोल छेद वाली मच्छरदानी की जाली की दशा में सूत का श्रोत काउन्ट निम्नलिखित सूत्र के अनुसार निकाला जायेगा, अर्थात् :—

(ताने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में सिरों की सं०) + (बाने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं० × 1.4)
(प्रति 25.4 मिलीमीटर में सिरों की सं०) + (प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं० × 1.4)

प्राप्त फल के, जहाँ आवश्यक हो, आधे या अधिक अंश का एक के रूप में मानते हुए और आधे से कम अंश को छोड़ते हुए, पूर्णकित किया जायेगा।

[फा० सं० 349/1/19-82-टी प्रार यू]

NO. 251/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 666(B).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957) and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 226/77-Central Excises, dated the 15th July, 1977, the Central Government hereby exempts cotton fabrics, falling under sub-item I of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), and specified in column (2) of the Table hereto annexed (hereafter in this notification referred to as the Table) from so much of the duty of excise leviable thereon both under the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) and the Additional Duties of Excise

(Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957) as is in excess of the amount calculated at the rate specified in the corresponding entry in column (3) thereof.

THE TABLE

Sl. No.	Description	Rate
1	2	3
1.	Cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more.	fifteen per cent. <i>ad valorem</i> .
2.	Cotton fabrics (other than those in which the average count of yarn is 51s or more), whose value per square metre—	
	(i) does not exceed four rupees,	two per cent. <i>ad valorem</i> .
	(ii) exceeds four rupees but does not exceed six rupees,	three per cent. <i>ad valorem</i> .
	(iii) exceeds six rupees but does not exceed seven rupees,	four per cent. <i>ad valorem</i> .
	(iv) exceeds seven rupees but does not exceed eight rupees,	six per cent. <i>ad valorem</i> .
	(v) exceeds eight rupees but does not exceed nine rupees,	eight per cent. <i>ad valorem</i> .
	(vi) exceeds nine rupees but does not exceed ten rupees,	ten per cent. <i>ad valorem</i> .
	(vii) exceeds ten rupees but does not exceed eleven rupees,	twelve per cent. <i>ad valorem</i> .
	(viii) exceeds eleven rupees but does not exceed twelve rupees,	fourteen per cent. <i>ad valorem</i> .
	(ix) exceeds twelve rupees.	fifteen per cent. <i>ad valorem</i> .
3.	Cotton fabrics not specified in Sl. Nos 1 and 2.	fifteen per cent. <i>ad valorem</i>

Provided that—

(i) in the case of handloom fabrics, when processed by an independent processor approved in this behalf by the Government of India on the recommendation of the Handloom Development Commissioner, the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by sixty per cent of such rate, subject to the following conditions, namely:—

(a) in the case of cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more when cleared after processing but without printing or dyeing or both the duty of excise leviable thereon under the said Acts shall be five per cent *ad valorem*;

(b) in the case of cotton fabrics, other than those covered by condition (a) above, such reduction from such rate shall not exceed six per cent *ad valorem*;

(ii) when handloom fabrics are processed with the aid of power by a factory owned by a registered handloom co-operative society or any organisation set up or approved by Government for the purpose of development

of handlooms, such fabrics shall be exempted from the whole of the duty of excise leviable thereon under the said Acts;

(iii) in the case of—

(a) cotton fabrics containing more than one-sixth by weight of fibre or yarn or both of non-cellulosic origin; and

(b) coating, suiting, tussors, corduroy, gabardine, bed-ford, satin, denim, lappet, butta fabrics, round mesh mosquito netting, lace, knitted fabrics, tapestry, furnishing fabric including jacquard curtain cloth, gadlapet, mattress fabric, terry towel including turkish towel, terry towelling cloth including turkish towelling cloth, blanket, canvas, duck, filter cloth, tracing cloth, and bukram cloth, manufactured on powerlooms (without spinning or processing plants) the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by six per cent *ad valorem* if the said rate on such fabric exceeds six per cent *ad valorem*, and shall be exempted in full if the said rate on such fabric does not exceed six per cent *ad valorem*;

(iv) in the case of powerloom fabrics [other than those covered by clause (iii)], and in the case of handloom fabrics [other than those covered by clause (i) and clause (ii)], when processed by an independent processor, the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by thirty per cent of such rate, subject to the following conditions, namely:—

(a) in the case of cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more when cleared after processing but without printing or dyeing or both, the duty of excise leviable thereon under the said Acts shall be eleven per cent *ad valorem*;

(b) in the case of cotton fabrics [other than those covered by condition (a) above], such reduction from such rate shall not exceed three per cent *ad valorem*;

(v) in the case of cotton fabrics processed without the aid of power or steam, the appropriate rate as specified in the Table, shall be reduced by seventy five per cent of such rate;

(vi) fabrics which answer to the description of 'Controlled Dhoti', 'Controlled Saree', 'Controlled Long Cloth', 'Controlled Shirting' or 'Controlled Drill' as defined from time to time by the Textile Commissioner under the Cotton Textile (Control) Order, 1948 and for which maximum ex-factory prices have been specified by the Textile Commissioner under the said Order, shall be exempt from the whole of the duty of excise leviable thereon under the said Acts, subject to the condition that such fabrics are not supplied by the factory in which they are manufactured or processed to an industrial concern, and if such fabrics are so supplied, the purchasing industrial concern certifies that the fabrics so purchased by it shall be used exclusively for wearable purposes and not for any other purposes;

(vii) in the case of Drill which answer to the description of 'Controlled Drill' as defined from time to time by the Textile Commissioner under the Cotton Textile (Control) Order, 1948, for which maximum ex-factory prices have not been specified by the Textile Commissioner under the said Order, the appropriate rate as specified in the table shall be reduced by fifty per cent of such rate;

Provided further that the amount of duty so levied shall be apportioned in the ratio of 75 : 25 between the duty leviable under the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) and the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957), respectively.

Provided also that nothing contained in this notification, shall apply to fents and rags of cotton fabrics.

Explanation. I.—For the purposes of this notification.—

(a) "fents" means —

(i) bonafide cut-pieces of cotton fabrics (excluding cut-pieces of towels) of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabric is one metre or more and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres, where the width of the fabric is less than one metre arising during the normal course of manufacturing (including processing) or packing or drawing samples;

(ii) damaged cotton fabrics (excluding damaged towels) of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabrics is one metre or more, and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres where the width of the fabrics is less than one metre; and

(iii) cut-pieces of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabric is one metre or more, and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres where the width of the fabric is less than one metre, cut from damaged dhoties or sarees;

(b) "handloom fabrics" means cotton fabrics made from cotton yarn (other than hand spun cotton yarn) and woven on looms worked by manual labour;

(c) "independent processor" means a manufacturer who is engaged exclusively in the processing of cloth with the aid of power and who has no proprietary interest in any factory engaged in the spinning of yarn or weaving of cotton fabrics;

(d) "rags" means —

(i) bonafide cut-pieces of cotton fabrics of length more than 23 centimetres but less than 45 centimetres where the width of the fabrics is one metre or more, and of length more than 23 centimetres but less than 65 centimetres where the width of the fabrics is less than one metre, arising during the normal course of manufacturing (including processing) or packing or drawing samples; and

(ii) cut-pieces of damaged or sub-standard cotton fabrics of length more than 23 centimetres but less than 45 centimetres where the width of the fabrics is one metre or more, and of length more than 23 centimetres but less than 65 centimetres where the width of the fabrics is less than one metre.

Explanation II.—'count' means the count of grey yarn.

Explanation III.—For the purpose of determining the average count of yarn in the cotton fabrics, the following rules shall apply, namely:—

(a) yarn used in the borders or selvages shall be ignored

(b) for multiple-fold yarn, the count of the basic single yarn shall be taken and the number of ends per 25.4 mm. in the reed or the number of picks per 25.4 mm., as the case may be, shall be multiplied by the number of plies in the yarn; where there are basic single yarns of different counts, the count of the basic single yarn which has the highest count shall be taken to be the count of each basic single yarn;

(c) in the case of fabrics manufactured from cotton and other yarn, the other yarn shall, for the aforesaid purposes, be deemed to be cotton yarn;

(d) where there are yarns of different counts in warp or weft or both, the count of the yarn which has the highest count shall be taken to be the count of warp or weft, as the case may be ;

(e) the average count of such yarn (other than in the case of round mesh mosquito netting) shall be obtained by applying the following formula, namely:—

$$\frac{(\text{Count of warp} \times \text{No. of ends per 25.4 mm. in the reed}) + (\text{Count of weft} \times \text{N. of picks per 25.4 mm.})}{(\text{No. of ends per 25.4 mm. in the reed} + \text{No. of picks per 25.4 mm.})}$$

the result being rounded off, wherever necessary, by treating any fraction which is one half or more as one, and disregarding any fraction which is less than one half; and

(f) in the case of round mesh mosquito netting, the average count of yarn shall be obtained by applying the following formula, namely:—

$$\frac{(\text{Count of warp} \times \text{No. of ends per 25.4 mm.}) + (\text{Count of weft} \times \text{No. of picks per 25.4 mm.} \times 1.4)}{(\text{No. of ends per 25.4 mm.}) + (\text{No. of picks per 25.4 mm.} \times 1.4)}$$

the result being rounded off, wherever necessary, by treating any fraction which is one half or more as one, and disregarding any fraction which is less than one half.

[F.No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 252/82-केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सं० 667(अ)—केन्द्रीय सरकार, अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 58) की धारा 3 की उपधारा (3) के साथ पठित केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के राजस्व और बैंकिंग विभाग की अधिसूचना सं० 136/77-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 18 जून, 1977 को अधिकांत करते हुए, इससे उपाखंड सारणी के (जिसे इस अधिसूचना में इसके पश्चात् 'सारणी' कहा गया है) स्तम्भ (2) में विनिर्दिष्ट वर्णन के और केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं० 19 की उपमद I के अन्तर्गत आने वाले सूती केब्रिक के टुकड़ों और चिपड़ों को, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) और अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 58), दोनों के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क की उतनी रकम से छूट देती है जिसकी उसके स्तम्भ (3) में की तत्संबन्धी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट दर से संगणित रकम से अधिक है।

सारणी

क्रम सं०	वर्णन	दर
(1)	(2)	(3)
1.	ऐसे सूती फैब्रिक में, जिनमें सूत का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है, निकले टुकड़े और चिपड़े।	मूल्य का पन्द्रह प्रतिशत।
2.	ऐसे सूती फैब्रिक से (जिनसे निम्न जिनमें सूत का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है) निकले टुकड़े और चिपड़े, जिनका मूल्य प्रति वर्ग मीटर—	
(i)	चार रुपये से अधिक नहीं है।	मूल्य का दस प्रतिशत।
(ii)	चार रुपये से अधिक है किन्तु सात रुपये से अधिक नहीं है।	मूल्य का तीस प्रतिशत।
(iii)	सात रुपये से अधिक है किन्तु नौ रुपये से अधिक नहीं है।	मूल्य का छह प्रतिशत।
(iv)	नौ रुपये से अधिक है किन्तु बारह रुपये से अधिक नहीं है।	मूल्य का दस प्रतिशत।
(v)	बारह रुपये से अधिक है।	मूल्य का पन्द्रह प्रतिशत।

(i) हथकरघा फैब्रिक की दशा में, जब उनका प्रसंस्करण हथकरघा विकास आयुक्त की निवारण पर भारत सरकार द्वारा इस निमित्त अनुमोदित स्वतन्त्र प्रसंस्करणकर्ता द्वारा किया जाता है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का साठ प्रतिशत निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए कम कर दिया जायेगा अर्थात्—

(क) ऐसे सूती फैब्रिकों की दशा में, जिनमें सूत का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है, जब उनकी निकाली प्रसंस्करण के पश्चात् किन्तु छपाई या रंगाई या दोनों के बिना की जाती है, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क मूल्य का पाँच प्रतिशत होगा;

(ख) ऐसे सूती फैब्रिक की दशा में, जो उपरोक्त शर्त (क) के अन्तर्गत आने वाले सूती फैब्रिक से भिन्न हैं, ऐसी दर में से ऐसी कमी मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक नहीं होगी;

(ii) जहाँ हथकरघा फैब्रिक का प्रसंस्करण किसी रजिस्ट्रीकृत हथकरघा सहकारी सोसाइटी के या हथकरघा के विकास के प्रयोजन के लिये केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित या अनुमोदित किसी संगठन के स्वामित्ववादी कारखाने द्वारा शक्ति की सहायता से किया जाता है वहाँ ऐसे फैब्रिकों को उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समस्त उत्पाद-शुल्क से छूट दी जायेगी;

(iii) (क) ऐसे सूती फैब्रिक, जिनमें अमलुनीसी मूल का फाइबर या सूत या दोनों का भार एक बटा छह से अधिक है; और (ख) ऐसे फाट के कपड़े, सूट के कपड़े, टस्सर, कार्डरॉय, गबरडीन, बेड-फोर्ड, साटन, डेनिम, जैपेट, बूटेदार फैब्रिक, गोल छत्र वाली मच्छरदानी की जाली, लेस, बुना हुआ फैब्रिक, टेपेस्ट्री, फर्निशिंग फैब्रिक जिनके अन्तर्गत जेकडें परदे का कागजा है, गड्ढापेंट, गद्दों का फैब्रिक, टेरी, तौलिए जिनके अन्तर्गत टर्किश तौलिए हैं, टेरी तौलिए के कपड़े जिनके अन्तर्गत टर्किश तौलिए के कपड़े हैं, काम्बल, फीनक्स, डक, फिल्टर कपड़े, ड्रेसिंग कपड़े और बुक्रम कपड़े,

की दशा में, जिनका विनिर्माण शक्तिकरकों (क्लार्क या प्रसंस्करण संयंत्रों) में किया गया है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से मूल्य का छह प्रतिशत उक्त दशा में कम कर दिया जायेगा जिसमें ऐसे फैब्रिक पर उक्त दर मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक है और उक्त दशा में पूर्णतः छूट दी जायेगी जिसमें ऐसे फैब्रिक पर उक्त दर मूल्य के छह प्रतिशत से अधिक नहीं है—

(iv) शक्ति करघा फैब्रिक की दशा में उनसे भिन्न जो [खण्ड (iii) के अन्तर्गत आते हैं], और हथकरघा फैब्रिक की दशा में [उनसे भिन्न जो खण्ड (i) और खण्ड (ii) के अन्तर्गत आते हैं], जब उनका संस्करण किसी स्वतन्त्र संस्करणकर्ता द्वारा किया जाता है, सारणी में यथा विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का तीस प्रतिशत निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए कम कर दिया जायेगा, अर्थात्—

(क) ऐसे सूती फैब्रिक की दशा में, जिनमें सूत का औसत काउन्ट 51 या उससे अधिक है, जब उनकी निकाली प्रसंस्करण के पश्चात् किन्तु छपाई या रंगाई या दोनों के बिना की जाती है, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क मूल्य का ग्यारह प्रतिशत होगा;

(ख) ऐसे सूती फैब्रिक की दशा में, जो उपरोक्त शर्त (क) के अन्तर्गत आने वाले सूती फैब्रिक से भिन्न हैं, ऐसी दर में से ऐसी कमी मूल्य के तीस प्रतिशत से अधिक नहीं होगी;

(v) ऐसे सूती फैब्रिक की दशा में, जिनका प्रसंस्करण शक्ति या बाण की सहायता के बिना किया जाता है, सारणी में यथा-विनिर्दिष्ट समुचित दर में से ऐसी दर का पन्द्रह प्रतिशत कम कर दिया जायेगा;

परन्तु यह और कि प्रसंस्कृत सूती फैब्रिक के, जिन पर उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समुचित उत्पाद-शुल्क का संदाय कर दिया गया है, पुनः प्रसंस्करण के परिणामस्वरूप निकले सूती फैब्रिक के टुकड़ों और चिपड़ों को उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय समस्त उत्पाद-शुल्क से छूट दी जायेगी।

परन्तु यह भी कि इस प्रकार उद्ग्रहणीय शुल्क की रकम, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और तमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) के अधीन और अधिनियम उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का भत्ता) अधिनियम, 1957 (1957 का 58) के अधीन उद्ग्रहणीय शुल्क के बीच कमज. 75:25 के अनुपात से प्रभाजित की जायेगी।

मार्गकरण I—रम अधिसूचना के प्रयोजनों के लिये—

(क) टुकड़े से अभिप्रेत है—

(i) विनिर्माण (जिसके अन्तर्गत प्रसंस्करण भी है) या पैक करने या लपटा लेने के सामान्य अनुभव के दौरान निकले सूती फैब्रिक के वर्गुल कटे टुकड़े (जिनके अन्तर्गत तंगियों के कटे टुकड़े नहीं हैं) जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 15 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अधिक और जो फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अधिक लम्बे हैं—

(ii) अधिश्रुत सूती फैब्रिक (जिनके अन्तर्गत अधिश्रुत तंगिये नहीं हैं) जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है, वहाँ 15 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अधिक, और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अधिक लम्बे हैं, और

(iii) क्षतिग्रस्त धोतियों या गट्टियों के कटे टुकड़े, जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 45 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अनधिक, और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर या उससे अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अनधिक लम्बे हैं;

(ख) "हथकरघा फैब्रिक" से मे रेम सूती फैब्रिक अभिप्रेत है जो कपास के सूत से (जोड़ा या नहीं) कपास के सूत से भिन्न है) तयार किए गए हैं और शारीरिक श्रम में चलने वाले कर्कों पर बुने गए हैं;

(ग) "स्वतंत्र प्रसंस्करण कर्ता" का ऐसा विनिर्दिष्ट अभिप्रेत है जो शक्ति का सहायता से वस्त्र के प्रसंस्करण में अन्ततः रूप से बना हुआ है और जिसका सूत की कटाई या सूती फैब्रिकों की कटाई में लगे हुए किसी कारखाने में कोई सामयिक दिन नहीं है।

(घ) "विषय" से अभिप्रेत है—

(i) विनिर्माण (जिसके अन्तर्गत प्रसंस्करण भी है) या पैक करने या नमूने लेने के सामान्य अनुक्रम के दौरान निकले सूती फैब्रिक के वस्तुतः कटे टुकड़े, जो, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 45 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अनधिक और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अनधिक, लम्बे हैं, और

(ii) क्षतिग्रस्त या निम्न गुणक के सूती फैब्रिक के कटे टुकड़े, जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर या उससे अधिक है वहाँ 45 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 90 सेंटीमीटर से अनधिक और जहाँ फैब्रिक की चौड़ाई एक मीटर से कम है वहाँ 65 सेंटीमीटर से अधिक किन्तु 135 सेंटीमीटर से अनधिक, लम्बे हैं।

सर्वांकन II.—सूती फैब्रिकों में सूत के औसत काउन्ट का अवधारण करने के प्रयोजन के लिए निम्नलिखित नियम लागू होंगे, अर्थात्—

(क) बाँझों या छोरों से प्रयुक्त सूत गणना में नहीं लिया जाएगा;

(ख) अनेक तारों वाले सूत के लिए, आधारों एक तार के सूत का काउन्ट लिया जाएगा और, यथास्थिति, रीड में प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या या प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या को सूत में प्लाईयों की संख्या से गुणा कर लिया जाएगा, जहाँ भिन्न-भिन्न काउन्टों के एक तार के आधारों सूत हैं वहाँ ऐसे एक तार के आधारों सूत का काउन्ट, जिसमें अधिकतम काउन्ट है, प्रत्येक आधारों एक तार के सूत के काउन्ट के रूप में गिना जाएगा;

(ग) सूती और अन्य सूत से विनिर्मित फैब्रिक की दशा में अन्य सूत को उपरोक्त प्रयोजन के लिए कपास का सूत समझा जाएगा,

(घ) जहाँ ताने या बुने में या दोनों में भिन्न काउन्टों के सूत हैं वहाँ उस सूत के काउन्ट को, जिसमें अधिकतम काउन्ट है, यथास्थिति, ताने या बुने का काउन्ट समझा जाएगा,

(ङ) सूत का (गोल छेद वाली मच्छानों की जाँच की दशा में से भिन्न) औसत काउन्ट निम्नलिखित सूत्र के अनुसार निकाला जाएगा, अर्थात्—(ताने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या (बाने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की संख्या)

रीड में प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं. प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं. (ग)

प्राप्त फल के अलावा आवश्यक हो, आधे या अधिक अंश को एक के रूप में मानते हुए और आधे से कम अंश को छोड़ते हुए, पूर्णकृत किया जाएगा।

(ब) गोल छेद वाली मच्छानों की जाँच की दशा में सूत का औसत काउन्ट निम्नलिखित सूत्र के अनुसार निकाला जाएगा, अर्थात्—

(ताने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं.) + (बाने का काउन्ट × प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं. × 1.4)

(प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं.) + प्रति 25.4 मिलीमीटर में पिकों की सं. × 1.4)

प्राप्त फल के अलावा आवश्यक हो, आधे या अधिक अंश को एक के रूप में मानते हुए और आधे से कम अंश को छोड़ते हुए, पूर्णकृत किया जाएगा।

[क्र.सं. 349/1/19/82-टी आर.सू.]

NO. 252/82—CENTRAL EXCISES

G.S.R. 667(E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957), and in supersession of the notification of the Government of India in the Department of Revenue and Banking No. 136/77-Central Excises, dated the 18th June, 1977, the Central Government hereby exempts fents and rags of cotton fabrics of the description specified in column (2) of the Table hereto annexed (hereafter in this notification referred to as the Table) and falling under sub-item I of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), from so much of the duty of excise leviable thereon both under the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) and the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957) as is in excess of the amount calculated at the rate specified in the corresponding entry in column (3) thereof.

THE TABLE

S. No.	Description	Rate
(1)	(2)	(3)
1.	Fents and rags arising out of cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more.	fifteen per cent. <i>ad valorem</i> .
2.	Fents and rags arising out of cotton fabrics (other than those in which the average count of yarn is 51s or more), where the value of such cotton fabrics per square metre.	
	(i) does not exceed four rupees,	two per cent. <i>ad valorem</i> .
	(ii) exceeds four rupees but does not exceed seven rupees,	three per cent. <i>ad valorem</i> .
	(iii) exceeds seven rupees but does not exceed nine rupees,	six per cent. <i>ad valorem</i> .

(1)	(2)	(3)	
			excise leviable thereon under the said Act shall be eleven per cent. <i>ad valorem</i> ;
(iv) exceeds nine rupees ten per cent. but does not exceed twelve rupees,			(b) in the case of cotton fabrics [other than those covered by condition (a) above] such reduction from such rate shall not exceed three per cent. <i>ad valorem</i> ;
(v) exceeds twelve rupees.	fifteen per cent. <i>ad valorem</i> .		(v) in the case of cotton fabrics processed without the aid of power or steam, the appropriate rate as specified in the Table, shall be reduced by seventy five per cent. of such rate.

Provided that —

- (i) in the case of handloom fabrics when processed by an independent processor, approved in this behalf by the Government of India on the recommendation of the Handloom development Commissioner in the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by sixty per cent. of such rate, subject to the following condition, namely :—

- (a) in the case of cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more when cleared after processing but without printing or dyeing or both, the duty of excise leviable thereon under the said Acts shall be five per cent. *ad valorem* ;

- (b) in the case of cotton fabrics, other than those covered by condition (a) above, such reduction from such rate shall not exceed six per cent. *ad valorem* ;

- (ii) when handloom fabrics are processed with the aid of power by a factory owned by a registered handloom co-operative society or any organisation set-up or approved by the Government for the purpose of development of handlooms, such fabrics shall be exempted from the whole of the duty of excise leviable thereon under the said Acts ;

- (iii) in the case of—

- (A) cotton fabrics containing more than one-sixth by weight of fibre or yarn of both or non-cellulosic origin ; and

- (B) coating, suiting tussors, corduroy, gaberdine, bedford, satin, denim, lappet, butta fabrics, round mosh mosquito netting lace, knitted fabrics, tapestry, furnishing fabric including jacquard curtain cloth, gullapet mattress fabric terry towel including turkish towel terry towelling cloth, including turkish towelling cloth, blanket, canvas, duck, filter cloth, tracing cloth and bukram cloth

manufactured on powerlooms (without spinning or processing plants) the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by six per cent. *ad valorem* if the said rate on such fabric exceeds six per cent. *ad valorem*, and shall be exempted in full if the said rate on such fabric does not exceed six per cent. *ad valorem* ;

- (iv) in the case of powerloom fabrics, other than those covered by clause (iii), and in the case of handloom fabrics other than those covered by clause (i) and clause (ii) when processed by an independent processor, the appropriate rate as specified in the Table shall be reduced by thirty per cent. of such rate, subject to the following conditions, namely :—

- (a) in the case of cotton fabrics in which the average count of yarn is 51s or more when cleared after processing but without printing or dyeing or both, the duty of

Provided further that rents and rags of cotton fabrics, resulting out of further processing of processed cotton fabrics on which appropriate duty of excise leviable thereon under the said Act has been paid, shall be exempted from the whole of the duty of excise leviable thereon under the said Act.

Provided also that the amount of duty so levied shall be apportioned in the ratio of 75:25 between the duty leviable under the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) and the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957), respectively.

Explanation I.—For the purposes of this notification,—

- (a) “fents” means —

- (i) bonafide cut-pieces of cotton fabrics (excluding cut-pieces of towels) of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabric is one metre or more, and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres where the width of the fabric is less than one metre, arising during the normal course of manufacturing (including processing) or packing or drawing samples ;

- (ii) damaged cotton fabrics (excluding damaged towels) of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabric is one metre or more and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres where the width of the fabric is less than one metre ; and

- (iii) cut-pieces of length 45 centimetres or more but not exceeding 90 centimetres where the width of the fabric is one metre or more, and of length 65 centimetres or more but not exceeding 135 centimetres where the width of the fabric is less than one metre, cut from damaged dhoties or sarees ;

- (b) “handloom fabrics” means cotton fabrics made from cotton yarn (other than hand spun cotton yarn) and woven on looms worked by manual labour ;

- (c) “independent processor” means a manufacturer who is engaged exclusively in the processing of cloth with the aid of power and who has no proprietary interest in any factory engaged in the spinning of yarn or weaving of cotton fabrics ;

- (d) “rags” means —

- (i) bonafide cut-pieces of cotton fabrics of length more than 23 centimetres but less than 45 centimetres where the width of the fabric is one metre or more, and of length more than 23 centimetres but less than 65 centimetres where the width of the fabric is less than one metre arising during the normal course of manufacturing (including processing) or packing or drawing samples ; and

- (ii) cut-pieces of damaged or sub-standard cotton fabrics of length more than 23 centimetres but less than

45 centimetres where the width of the fabric is one metre or more, and of length more than 23 centimetres but less than 65 centimetres where the width of the fabric is less than one metre

Explanation II.—For the purpose of determining the average count of yarn in cotton fabrics, the following rules shall apply, namely:—

- (a) yarn used in the borders or selvages shall be ignored;
- (b) for multiple-fold yarn, the count of the basic single yarn shall be taken and the number of ends per 25.4 mm. in the reed or the number of picks per 25.4 mm., as the case may be, shall be multiplied by the number of plies in the yarn; where there are basic single yarns of different counts, the count of the basic single yarn which has the highest count shall be taken to be the count of each basic single yarn;
- (c) in the case of fabrics manufactured from cotton and other yarn, the other yarn shall, for the aforesaid purposes, be deemed to be cotton yarn;
- (d) where there are yarns of different counts in warp or weft or both, the count of the yarn which has the highest count shall be taken to be the count of warp or weft, as the case may be;
- (e) the average count of such yarn (other than in the case of round mesh mosquito netting) shall be obtained by applying the following formula, namely:—

(Count of warp x No. of ends per 25.4 mm. in the reed) +
(Count of weft x No. of picks per 25.4 mm.).

(No. of ends per 25.4 mm. in the reed + No. of picks per 25.4 mm.).

the result being rounded off, wherever necessary, by treating any fraction which is one half or more as one, and disregarding any fraction which is less than one half.

- (i) in the case of round mesh mosquito netting, the average count of yarn shall be obtained by applying the following formula, namely:—

(Count of warp x No. of ends per 25.4 mm.) + (Count of weft x No. of picks per 25.4 mm. x 1.4)

(No. of ends per 25.4 mm.) + (No. of picks per 25.4 mm. x 1.4).

the result being rounded off, wherever necessary, by treating any fraction which is one half or more as one, and disregarding any fraction which is less than one half.

[F.No. 349/1/19/82--TRU]

सं० 253/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां०कां०मि० 688(अ).—केन्द्रीय सरकार, अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 57) की धारा 3 की उपधारा (3) के साथ पठित केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के अधिनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के वित्त मन्त्रालय (राजस्व और रक्षा विभाग) की अधिसूचना सं० 84/76 केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, सार्वजनिक विचार, 1971 का अधिष्ठात करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) का पहला अनुसूची के मध्यां 19 की उपसद 1 के अंतर्गत आने वाले सूती फैब्रिक को, जहाँ उन पर इससे उपाद-शुल्क सारणी में उपाद-शुल्क निर्दिष्ट नहीं प्रकिया या प्रकिया का जाता, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

और इसका अधिनियम 1944 (1944 का 1) और अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 58) दोनों, के अन्तर्गत उन पर उपाद-शुल्क समस्त उपाद-शुल्क से छूट देता है परन्तु ऐसा छूट दान या ग्राह्य होगी अथवा—

- (i) उक्त मध्यां 19 की उपसद 1(क) के अंतर्गत आने वाले अप्रसंस्कृत सूती फैब्रिक पर, जिन पर पूर्वानुगत रूप से अप्रसंस्कृत के अन्तर्गत उपाद-शुल्क आते हैं या आगे आने वाले उपाद-शुल्क में विनिर्दिष्ट कोई प्रकिया या प्रकियाएँ, उन कारखानों के अन्तर्गत की जाती हैं जिसमें उक्त अप्रसंस्कृत फैब्रिक का उत्पादन किया गया है; या
- (ii) उक्त मध्यां 19 की उपसद 1 के अंतर्गत आने वाले सूती फैब्रिक पर, उपाद-शुल्क में विनिर्दिष्ट कोई प्रकिया या प्रकियाएँ, उक्त कारखानों के अन्तर्गत की जाती हैं जिसमें उन पर उक्त सारणी में विनिर्दिष्ट प्रकिया से भिन्न कोई प्रकिया की गई है।

सारणी

1. कलेंडर करना (खनिश लेपनों द्वारा का गई कलेंडरिंग से भिन्न)।
2. फलार्सेन तैयार करना।
3. स्टेटर करना।
4. कोरे और विरजित तन्तुओं को भिन्नो।
5. कोरे और विरजित छटे तन्तुओं को पृष्ठ भराना।
6. सिगरेट, अर्थात् फैब्रिक की गुथियों और छोटे किनारों को जमाना।
7. स्कोरिंग, अर्थात्, रई में पाए गए सूत और प्राकृतिक तेल का भक्षण करना।
8. समाकर्मन या बूटा कटाई।
9. संसाधन या ताप के द्वारा सैटिंग करना।
10. पैडिंग अर्थात् किसी फैब्रिक के एक या दोनों ओर प्राकृतिक स्टार्च लगाना।
11. प्रसार करना।
12. शक्ति की गहायता के साथ जल-निष्कर्षण अर्थात् फैब्रिक में जल का योजित निष्कर्षण या योजित निष्कर्षण।

[फा० सं० 349/1/19/82-टी आर ए]

NO. 253/82-CENTRAL EXCISES

GSR. 668 (E):—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (53 of 1957), and in supersession of the notifications of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) Nos. 80/76-Central Excises and 122/76-Central Excises, dated the 16th March, 1976, the Central Government hereby exempts cotton fabrics, falling under sub-item I of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act (1 of 1944) with a subject to any process or processes specified in the Table here to annexed, from the whole of the duty of excise leviable thereon both under the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) and the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957).

Provided that no such exemption shall apply:—

- (i) if unprocessed cotton fabrics, falling under sub-item I(a) of the said Item No. 19, on which the duty of excise leviable thereon under any of the aforesaid two Acts,

either in whole or in part, are subjected to any process or processes specified in the said Table, within the factory in which the said unprocessed fabrics have been produced; or

- (ii) if cotton fabrics, falling under sub-item I of the said Item No. 19, are subjected to any process or processes specified in the said Table within the same factory in which they have been subjected to any process other than the processes specified in the said Table.

The Table

1. Calendering (other than calendering with grooved rollers).
2. Flannel-levelling.
3. Singeing.
4. Dyeing on grey and bleached sorts.
5. Back-filing on grey and bleached sorts.
6. Singeing, that is to say, burning away of knots and loose ends in the fabrics.
7. Scouring, that is to say, removing yarn size and natural oil found in cotton.
8. Cropping or butt-cutting.
9. Curing or heat setting.
10. Padding, that is to say, applying material to one or both sides of the fabric.
11. Expanding.
12. Hydro-extraction with the aid of power, that is to say, mechanically extracting or mechanically squeezing out water from the fabric.

[F.N. 349/1/19/82-TRU]

सं 254/82/केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां. कां. निं. 669 (अ) — केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की अधिसूचना सं. 65/69-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 1 मार्च, 1969 को अधिकांत करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और तमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं. 19 की उपमद II के अन्तर्गत आने वाले सूती कैंब्रिक को, जिसका विनिर्माण उद्यम प्रकार की स्वचालित शटल कसीदाकारी मशीनों में मित मशीनों पर किया गया है, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क के उतने भाग से छूट देती है जितना उक्त अधिनियम के अधीन मूल सूती कैंब्रिक पर, ऐसे कैंब्रिक कसीदाकारी की प्रक्रिया करने के पूर्व, उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क से अधिक है।

[कां. सं. 349/1/19/82-टी आर यू]

No. 254/82-CENTRAL EXCISES

GSR. 669 (E):—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) No. 65/69-Central Excises, dated the 1st March, 1969 the Central Government hereby exempts cotton fabrics, falling under sub-item II of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) manufactured on machines other than vertical type automatic shuttle embroidery machines, from so much of the duty of excise leviable thereon under the said Act, as is in excess of the duty of excise leviable on the base

cotton fabrics under the said Act before such fabrics are subjected to the process of embroidery.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं 255/82/केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां. कां. निं. 670 (अ) — केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 271/77-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 11 अगस्त, 1977 को अधिकांत करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और तमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) का पहला अनुसूची की मद सं. 19 की उपमद II के अन्तर्गत आने वाले सूती कैंब्रिक को, उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उक्त पहली अनुसूची में निर्दिष्ट दर से उद्ग्रहणीय से उत्पाद-शुल्क की उतनी रकम से छूट देती है जितनी —

(क) उक्त अधिनियम के अधीन मूल कैंब्रिक पर उद्ग्रहणीय उत्पाद-शुल्क, यदि उतना उद्ग्रह हो सकेगा नहीं कर दिया गया है; और

(ख) ऐसे सूती कैंब्रिक पर मूल्य के मान प्रतिशत, की दर पर संगणित रकम से अधिक है;

परन्तु इस अधिसूचना में अतिरिक्त कोई बात ऐसे किसी विनिर्माण को लागू नहीं होगी जो मूल कैंब्रिक पर सदत शुल्क के बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के नियम 56क के अधीन विहित विशेष का लाभ उठाता है।

[कां. सं. 349/1/19/82-टी आर यू]

No. 255/82-CENTRAL EXCISES

GSR 670 (E):—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944 and in supersession of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 271/77-Central Excises, dated the 11th August, 1977 the Central Government hereby exempts cotton fabrics falling under sub-item II of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), from so much of the duty of excise leviable thereon under the said Act as the rate specified in the said First Schedule is in excess of the amount calculated at the rate of —

(a) the duty of excise leviable on the base fabrics under the said Act, if not already paid; and

(b) Seven per cent. ad valorem on such cotton fabrics;

Provided that nothing contained in this notification shall apply to a manufacturer who avails of the special procedure prescribed under rule 56A of the Central Excise Rules, 1944 in respect of the duty paid on the base fabrics.

[F.N. 349/1/19/82-TRU]

सं 256/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां. कां. निं. 671 (अ) — केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं. 273/77-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 11 अगस्त, 1977 का अधिकांत करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और तमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं. 19 की उपमद III के अन्तर्गत आने वाली पी बी सी लेपित और संवेचित संवाहक मट्टियों को उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उक्त पहली अनुसूची में

विनिर्दिष्ट दर से उद्योगीय उत्पाद-शुल्क की उतनी रकम से छूट देती है जितनी—

(क) उक्त अधिनियम के अधीन मूल फैब्रिक पर उद्योगीय उत्पाद-शुल्क, यदि उसका पहले ही संदाय नहीं कर दिया गया है; और

(ख) ऐसी गारंटी पट्टी पर मूल्य के चौबीस प्रतिशत, की दर से संगणित रकम से अधिक है;

परन्तु इस अधिसूचना की कोई बात ऐसे विनिर्माता को लागू नहीं होगी जो मूल फैब्रिक पर संदाय शुल्क के बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 56A के अधीन विहित विशेष प्रक्रिया का लाभ उठाता है।

[का० सं० 349/1/19/82-टी प्रारम्भ]

NO. 256/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 671 (F) :- In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 3 of the Central Excise Rules, 1944, and in pursuance of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 273/77-Central Excises, dated 11th August, 1977, the Central Government hereby exempts PVC coated or impregnated conveyor belting falling under sub-item III of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), from so much of the duty of excise leviable thereon under the said Act at the rate specified in the said First Schedule, as is in excess of the amount calculated at the rate of—

(a) the duty of excise leviable on the base fabrics under the said Act, if not already paid; and

(b) twenty four per cent ad valorem on such conveyor belting;

Provided that nothing contained in this notification shall apply to a manufacturer who avails of the special procedure prescribed under rule 56A of the Central Excise Rules, 1944, in respect of the duty paid on the base fabrics.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 257/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सा० का० नि० 672 (अ).—केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, और भारत सरकार के वित्त मन्त्र (राजस्व विभाग) की अधिसूचना सं० 29/81-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 1 मार्च, 1981 की अधिकांश करने हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं० 19 की उपमद IV के अन्तर्गत आने वाले सूती फैब्रिक को उक्त अधिनियम के अधीन उन पर उक्त पहली अनुसूची में विनिर्दिष्ट दर से उद्योगीय उत्पाद-शुल्क की उतनी रकम से छूट देती है जितनी—

(क) उक्त अधिनियम के अधीन मूल फैब्रिक पर उद्योगीय उत्पाद-शुल्क, यदि उसका पहले ही संदाय नहीं कर दिया गया है; और

(ख) ऐसे सूती फैब्रिक पर मूल्य के पन्द्रह प्रतिशत, की दर से संगणित रकम से अधिक है;

* परन्तु इस अधिसूचना की कोई बात ऐसे विनिर्माता को लागू नहीं होगी जो मूल फैब्रिक पर संदाय शुल्क के बारे में केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के नियम 56A के अधीन विहित विशेष प्रक्रिया का लाभ उठाता है।

[का० सं० 349/1/19/82-टी प्रारम्भ]

NO. 257/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 672 (E) :- In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 3 of the Central Excise Rules, 1944 and in pursuance of the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. 29/81-Central Excises, dated the 1st March, 1981, the Central Government hereby exempts cotton fabrics, falling under sub-item IV of Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) from so much of the duty of excise leviable thereon under the said Act at the rate specified in the said First Schedule, as is in excess of the amount calculated at the rate of—

(a) the duty of excise leviable on the base fabrics under the said Act, if not already paid; and

(b) fifteen per cent ad valorem on such cotton fabrics;

Provided that nothing contained in this notification shall apply to the manufacturer who avails of the special procedure prescribed under rule 56A of the Central Excise Rules, 1944, in respect of the duty paid on the base fabrics.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 258/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सा० का० नि० 673 (अ).—केन्द्रीय सरकार, अनिश्चित उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 58) की धारा 3 की उपधारा (3) के साथ पठित केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उप नियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की पहली अनुसूची की मद सं० 19 के अन्तर्गत आने वाले सूती फैब्रिक के नमूनों को, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और शुल्क अधिनियम, 1944 (1944 का 1) और अनिश्चित उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का माल) अधिनियम, 1957 (1957 का 58) दोनों, के अधीन उन पर उद्योगीय समस्त उत्पाद-शुल्क से नोचे की गारण्टी के मूल्य (2) और (3) में विनिर्दिष्ट सीमाओं और शर्तों के अधीन रहते हुए, छूट देती है।

सारणी

क्र० सं०	आकार और सीमाएं	मंजूरा के बारे में शर्त
1	2	3

1 निम्नलिखित से अधिक नहीं विदेश बाजार के लिए नमूनों के रूप में लिया गया है, परन्तु यह तब जब

(क) पूरी चौड़ाई सहित मीटर

कि—

संख्या—

(क) प्रत्येक किस्म का गांठ से केवल

(ख) वस्त्र धातु के मामले में पूरी

एक नमूना लिया गया है,

संख्याई का ध्यान जैसे कि बैड

(ख) नमूने वास्तव में विदेश व्यापार के प्रयोजनों के लिए हैं,

कवर और बैड-जोड ।

(ग) ऐसे नमूनों के वास्तविक नियमित के बारे में समुचित आधिकारी के संपक्ष समाधानप्रदा रूप में दस्तावेजी माध्यम प्रस्तुत किया गया है।

(घ) ऐसे अभिलेख, जो कलक्टर द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं, रखे जाते हैं।

(1)	(2)	(3)	(1)	(2)	(3)
2 पूरी चौड़ाई सहित अधिक से अधिक 92 सेंटीमीटर लम्बा।	कारखाने के परिसरों के भीतर या बाहर परीक्षणों के प्रयोजनों के लिए निकाले गये हैं।				(b) samples are for bona-fide overseas trade purposes ;
3 एक मास में निकासी की गई प्रत्येक किस्म या प्रकार के 0.1 प्रतिशत की अधिकतम मात्रा के अधीन रहते हुए पूरी चौड़ाई सहित अधिक से अधिक 50 सेंटीमीटर लम्बा।	वास्तविक व्यापार प्रयोजनों के लिए निकाले गए हैं।				(c) satisfactory documentary evidence is produced before the proper officer regarding the actual export of such samples.
परन्तु केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 की पहली अनुसूची की मद सं० 19 की उपमद ii और iii के अंतर्गत आने वाले सूती फैब्रिक की दशा में नमूनों की अधिकतम मात्रा पूर्ववर्ती मास के दौरान देशी उपभोग के लिए विशिष्ट माल की कूल शुल्क-संदत निकासियों के 0.01 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।					(d) such goods may be admitted by Collectorism intined.
4 पूरी चौड़ाई सहित एक मीटर तक लंबा।	टैक्सटाइल समिति द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारियों द्वारा निकाले गए हैं।		2. Not exceeding 92 centimetres in length by full width.	Drawn for test purposes within or outside the factory premises.	
5. "घोती" या "साडी" के बारे में एक थान और अन्य फैब्रिकों का पूरी चौड़ाई सहित अधिक से अधिक 2.7 सेंटी-मीटर लंबा।	टैक्सटाइल आयातक या पूर्ति और निपटान महानिदेशक द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारियों द्वारा निकाले गए हैं।		3. Not exceeding 50 centimetres in length by full width subject to a maximum quantity of 0.1 per cent of each sort or variety cleared in a month.	Drawn for bona-fide trade purposes.	

[फा० सं० 349/1/19/82/टी आर यू]

No. 258/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 673 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957) the Central Government hereby exempts samples of cotton fabrics, falling under Item No. 19 of the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944) from the whole of the duty of excise leviable there on both under the Central Excises and Salt Act, 1944 and the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957) subject to the limitations and conditions specified in columns (2) and (3) of the Table below.

TABLE

Sl. No.	Limitations with regard to size and number	Conditions
(1)	(2)	(3)

- | | |
|--|---|
| 1. Not exceeding— | Drawn as samples for |
| (a) 50 centimetres in length by full width | overseas markets provided that— |
| (b) a full length piece in respect of piece goods such as bed covers and bed sheets. | (i) only one sample is drawn from each sort or bale ; |

- | | |
|--|--|
| 4. Upto one metre in length by full width. | Drawn by officers duly authorised by the Textiles Committee. |
| 5. One piece in respect of 'Dhoti' or 'Sari' and not exceeding 2.7 metres in length by full width of either of them. | Drawn by officers duly authorised by the Textiles Committee or Director General of Supplies and Disposals. |

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 259/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सं० फा० सं० 674 (अ) — केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के नियम 8 के उप नियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और वीमा विभाग) की अधिसूचना सं० 171/70-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 21 नवम्बर, 1970 में निम्नलिखित और संशोधन करती है अर्थात्:—

उक्त अधिसूचना से उल्लेखित तारियों की कम सं० 14 और उससे संबंध प्रविष्टियों का लोप किया जाएगा।

[फा० सं० 349/1/19/82-टी आर यू]

No. 259/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 674 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules 1944, the Central Government hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of

Finance (Department of Revenue and Insurance) No. 171/70-Excises, dated the 21st November, 1970, namely :-

In the Table annexed to the said notification, Sl. No. 14 and the entries relating thereto shall be omitted.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 260/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां० कां० नि० 675 (अ).--केन्द्रीय सरकार केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की निम्नलिखित अधिसूचनाओं को विधिवत करती है अर्थात् :-

1. सं० 69/69-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 1 मार्च 1969
2. सं० 70/69-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 1 मार्च 1969
3. सं० 135/69-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 8 मई 1969
4. सं० 67/70-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 21 मार्च 1970
5. सं० 106/73-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तारीख 18 अप्रैल 1973

[सां० सं० 349/1/19/82-टी प्रार ५]

No. 260/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 675(E).--In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excises rules, 1944 the Central Government hereby rescinds the following notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance), namely :-

1. No. 69/69-Central Excises, dated the 1st March, 1969.
2. No. 70/69-Central Excises, dated the 1st March, 1969.
3. No. 135/69-Central Excises, dated the 8th May, 1969.

4. No. 67/70-Central Excises, dated the 21st March, 1970.

5. No. 106/73-Central Excises, dated the 28th April, 1973.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]

सं० 261/82-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सां० कां० नि० 676 (ख).--केन्द्रीय सरकार अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क (विशेष महत्व का मांग) अधिनियम 1957 (1957 का 58) की धारा 3 की उपधारा (3) के साथ पठित केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क नियम 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की निम्नलिखित अधिसूचनाओं को विधिवत करती है अर्थात् :-

1. सं० 57/73-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 1 मार्च, 1973
2. सं० 143/75-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क, तारीख 7 जून, 1975

[सां० सं० 349/1/19/82-टी प्रार ५]

जितेन्द्र बत्रा, अवर सचिव

No. 261/82-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 676 (E).--In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special Importance) Act, 1957 (58 of 1957), the Central Government hereby rescinds the following notifications of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance), namely:-

- No. 57/73-Central Excises, dated the 1st March, 1973.
2. No. 143/75-Central Excises, dated the 7th June, 1975.

[F. No. 349/1/19/82-TRU]
JITENDRA BATRA, Under Secy.

